कथा सरिता

मौन से जानो खुद को

एक बार एक मछलीमार अपना काँटा डाले तालाब के किनारे बैठा था। काफी समय बाद भी कोई मछली उसके काँटे में नहीं फँसी थी। उसने सोचा कि कहीं ऐसा तो नहीं कि मैने काँटा गलत जगह डाला हो और यहाँ कोई मछली ही न हो। उसने तालाब में झाँका तो देखा कि उसके काँटे के आसपास बहुत-सी मछलियाँ थीं। उसे बहुत आश्चर्य हुआ कि इतनी सारी मछलियाँ होने के बाद भी कोई मछली फँसी क्यों नहीं जबकि काँटे में दाना भी लगा है। क्या कारण हो सकता है?

वह ऐसा सोच ही रहा था कि एक राहगीर ने उससे कहा-लगता है भैया यहाँ पर मछली मारने बहुत दिनों बाद आए हो। इस तालाब की मछलियाँ अब काँटे में नहीं फँसती। इस पर उसने हैरत से पूछा- क्यों, ऐसा क्या हुआ है यहाँ? राहगीर बोला- पिछले दिनों तालाब के किनारे एक बहुत बड़े संत आकर ठहरे थे। उन्होने यहां "मौन की महत्ता" पर प्रवचन दिए थे। उनकी वाणी में इतना तेज था कि जब वे प्रवचन देते तो सारी मछलियाँ बड़े ध्यान से सुनतीं। यह उनके प्रवचनों का ही असर है कि उसके बाद जब भी कोई इन्हें फँसाने के लिए काँटा डालकर बैठता है तो ये "मौन" धारण कर लेती हैं। जब मछली मुँह खोलेगी ही नहीं तो काँटे में फँसेगी कैसे? इसलिए बेहतर यही है कि आप कहीं और जाकर काँटा डालो। उसकी बात मछलीमार की समझ में आ गई और वह वहां से चला गया।

कितनी सही बात है यह, जब मुँह खोलोगे ही नहीं तो फँसोगे कैसे? यह बात मछलियों की तरह उन व्यक्तियों को भी समझ लेनी चाहिए कि जो अपनी बकबक करने की आदत के चलते स्थान और समय का ध्यान रखे बिना अपना मुँह खोलकर मुसीबत में फँस जाते हैं। गलाकाट प्रतियोगिता के इस युग में इस बात का महत्व उस समय और बढ़ जाता है जब न जाने कौन अपना काँटा डाले, आपको फँसाने के चक्कर में हो। जैसे ही आपने मुँह खोला, आप फँसे। ऐसी परिस्थितियों से बचने के लिए ज़रूरी है कि हम मौन का अभ्यास करें। धीरे-धीरे अभ्यास से हम सीख जाएं ।

एक बार तुलसीदास जी से किसी ने पूछा :-
कभी-कभी भक्ति करने को मन नहीं करता फिर भी नाम जपने के लिये बैठ जाते हैं, क्या उसका भी कोई फल मिलता है?
तुलसी दास जी ने मुस्करा कर कहा-
तुलसी मेरे राम को रीझ भजो या खीज।
भौम पड़ा जामे सभी उल्टा सीधा बीज।।
अर्थात् :
भूमि में जब बीज बोये जाते हैं तो यह नहीं देखा जाता कि बीज उल्टे पड़े हैं या सीधे पर फिर भी कालांतर में फसल बन जाती है, इसी प्रकार नाम सुमिरन कैसे भी किया जाये, उसके सुमिरन का फल अवश्य ही मिलता है ।।

केवल कृपा है...

किसी ने एक दिन एक घड़े में गंगाजल भरकर सन्तों की सभा में रखवाया- सन्तों के पीने के लिए।

एक व्यक्ति ने देखा। वह सोचने लगा -"यह घड़ा कितना भाग्यशाली है कि इसमें गंगाजल भरा गया और अब ये सन्तों के काम आयेगा"।

घड़ा बोल पड़ा- "मैं तो मिट्टी के रूप में शून्य पड़ा था, किसी काम का नहीं था। कभी नहीं लगता था कि भगवान् ने हमारे साथ न्याय किया है। फिर एक कुम्हार आया। उसने फावड़ा मार-मारकर हमको खोदा और गधे पर लादकर अपने घर ले गया और वहाँ ले जाकर हमको उसने रौंदा। फिर पानी डालकर गूँथा और चाक पर चढ़ाकर घुमाया, फिर गला काटा और फिर थापी मार-मारकर बराबर किया। उसके बाद आग में जलने को डाल दिया और जब तैयार होकर निकला तो बाजार में भेज दिया। वहाँ भी लोग ठोक-ठोककर देख रहे थे कि ठीक है कि नहीं, और कीमत लगायी-10 20 रुपये!

हमको तो इन सबमें भगवान् का अन्याय ही जान पड़ता था, कृपा थोड़े ही मालूम पड़ती थी! किसी सज्जन ने मुझे खरीद लिया और जब मुझमें गंगाजल भरकर सन्तों की सभा में भेज दिया, तब मुझे मालूम पड़ा कि कुम्हार का वह फावड़ा चलाना भी भगवान् की कृपा थी, उसका वह गूँथना भी भगवान् की कृपा थी, आग में जलाना भी भगवान् की कृपा थी और बाजार में लोगों के द्वारा ठोका जाना भी भगवान् की कृपा ही थी। अब मालूम पड़ा कि सब भगवान् की कृपा ही कृपा थी"!

तो असल में आप ईश्वर की कृपा पर विश्वास करेंगे, तो आप जहाँ भी देखेंगे वहाँ ही आपको "कृपा" मालूम पड़ेगी! बस, कृपा-ही-कृपा, कृपा-ही-कृपा!

"प्रभु स्मृति कृपा मयी है"

प्रभु के पास कृपा के सिवाय और कोई पूँजी है ही नहीं।

केवल कृपा है!!!! कृपा है!! कृपा है!!!!

कोयले न बनाओ

सुनसान जंगल में एक लकड़हारे से पानी का लोटा पीकर प्रसन्न हुआ राजा कहने लगा, हे पानी पिलाने वाले ! किसी दिन मेरी राजधानी में अवश्य आना, मैं तुम्हें पुरस्कार दूंगा। लकड़हारे ने कहा, बहुत अच्छा।

इस घटना को घटे पर्याप्त समय व्यतीत हो गया, अन्ततः लकड़हारा एक दिन चलता-फिरता राजधानी में जा पहुँचा और राजा के पास जाकर कहने लगा, मैं वही लकड़हारा हूँ, जिसने आपको पानी पिलाया था, राजा ने उसे देखा और अत्यन्त प्रसन्नता से अपने पास बिठाकर सोचने लगा कि- इस निर्धन का दु:ख कैसे दूर करुँ? अन्ततः उसने सोच-विचार के पश्चात् चन्दन का एक विशाल उद्यान(बाग) उसको सौंप दिया। लकड़हारा भी मन में प्रसन्न हो गया। चलो अच्छा हुआ। इस बाग के वृक्षों के कोयले खूब होंगे, जीवन कट जाएगा।

यह सोचकर लकड़हारा प्रतिदिन चन्दन काट-काटकर कोयले बनाने लगा और उन्हें बेचकर अपना पेट पालने लगा। थोड़े समय में ही चन्दन का सुन्दर बगीचा एक वीरान बन गया, जिसमें स्थान-स्थान पर कोयले के ढ़ेर लगे थे। इसमें अब केवल कुछ ही वृक्ष रह गये थे, जो लकड़हारे के लिए छाया का काम देते थे।

राजा को एक दिन यूँ ही विचार आया। चलो, तनिक लकड़हारे का हाल देख आएँ। चन्दन के उद्यान का भ्रमण भी हो जाएगा। यह सोचकर राजा चन्दन के उद्यान की ओर जा निकला। उसने दूर से उद्यान से धुआँ उठते देखा। निकट आने पर ज्ञात हुआ कि चन्दन जल रहा है और लकड़हारा पास खड़ा है। दूर से राजा को आते देखकर लकड़हारा उसके स्वागत के लिए आगे बढ़ा। राजा ने आते ही कहा, भाई ! यह तूने क्या किया? लकड़हारा बोला, आपकी कृपा से इतना समय आराम से कट गया। आपने यह उद्यान देकर मेरा बड़ा कल्याण किया। कोयला बना-बनाकर बेचता रहा हूँ। अब तो कुछ ही वृक्ष रह गये हैं। यदि कोई और उद्यान मिल जाए तो शेष जीवन भी व्यतीत हो जाए।

राजा मुस्कुराया और कहा, अच्छा, मैं यहाँ खड़ा होता हूँ। तुम कोयला नहीं, प्रत्युत इस लकड़ी को ले-जाकर बाज़ार में बेच आओ। लकड़हारे ने दो गज, लगभग पौने दो मीटर की लकड़ी उठाई और बाज़ार में ले गया। लोग चन्दन देखकर दौड़े और अन्ततः उसे तीन सौ रुपये मिल गये, जो कोयले से कई गुना ज़्यादा थे।

लकड़हारा मूल्य लेकर रोता हुआ राजा के पास आया और ज़ोर-ज़ोर से रोता हुआ अपनी भाग्यहीनता स्वीकार करने लगा।

इस कथा में चन्दन का बाग मनुष्य का शरीर और हमारा एक-एक श्वास चन्दन के वृक्ष हैं पर अज्ञानता वश हम इन चन्दन को कोयले में तब्दील कर रहे हैं। लोगों के साथ बैर, द्वेष, क्रोध, लालच, ईर्ष्या, मनमुटाव, को लेकर खींच-तान आदि की अग्नि में हम इस जीवन रूपी चन्दन को जला रहे हैं। जब अंत में श्वास रूपी चन्दन के पेड़ कम रह जायेंगे तब अहसास होगा कि व्यर्थ ही अनमोल चन्दन को इन तुच्छ कारणों से हम दो कौड़ी के कोयले में बदल रहे थे, पर अभी भी देर नहीं हुई है हमारे पास जो भी चन्दन के पेड़ बचे हैं उन्हीं से नए पेड़ बन सकते हैं। आपसी प्रेम, सहायता, सौहार्द, शांति, भाईचारा और विश्वास के द्वारा अभी भी जीवन सँवारा जा सकता है।

बोस्टन-यू.एस.ए.। 'द फ्यूचर ऑफ पॉवर' कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में निज़ार जुमा, डी.कला लेंगर, ज्यूडी रोगर्स, जेम्स ओर्लेन्स, जॉन वेस्टमैन, जैरी तथा अन्य गणमान्य प्रतिभागी व अतिथिगण।

दिल्ली-सिविल लाइंस। दीपावली के अवसर पर मुख्यमंत्री माननीय अरविंद केजरीवाल को बधाई देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. मीरा। साथ हैं नरेन्द्र जैन, प्रदीप मल्होत्रा तथा अन्य।

मेरठ-पल्लवपुरम। गीता पाठशाला में पल्लव पब्लिक स्कूल के बच्चों द्वारा रंगारंग कार्यक्रम की प्रस्तुति दिये जाने के पश्चात् बच्चों को सौगात देते हुए ब्र.कु. ऊषा।

शिमला-हि.प्र.। आर्मी वाइफ्स वेलफेयर एसोसिएशन में 'स्ट्रेस मैनेजमेंट एवं राजयोग' विषय पर कार्यक्रम के दौरान मंचासीन हैं ब्र.कु. सुनीता, ब्र.कु. रितु तथा ब्र.कु. चौहान। सम्बोधित करते हुए ए.डब्ल्यू.डब्ल्यू.ए.की प्रेसीडेंट सुषमा सोनी।

रादौर-कुरुक्षेत्र। दीपावली पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. सरोज। साथ हैं ब्र.कु. सुदर्शन, ब्र.कु. राज तथा ब्र.कु. राजू।

सादुलपुर-राज.। 'शिव समर्पण महापरिवर्तन योग भट्ठी' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. शीला, ब्र.कु. सुमन, ब्र.कु. हरगोविंद,मा. आबू व ब्र.कु. शोभा।